9

ज़बान को लगाम देना (3:1-12)

यह जानना हैरान करने वाला है कि सम्प्रेषण के माहिर अनुमान लगाते हैं कि औसतन एक व्यक्ति दिन में इतनी बातें करता है कि जिससे लगभग बीस पन्ने टाइप किए जा सकते हैं, यह महीने में तीन सौ पन्नों वाली दो, साल में चौबीस, और पचास साल में 1,200 पुस्तकें बनाने के लिए काफ़ी है। स्पष्टतया बातें करना हमारे जीवन का बहुत बड़ा भाग है। यह इतना बड़ा भाग है कि अधिकतर पाठशालाओं में भाषण देने की योग्यता को सुधारने में सहायता के लिए कोर्स करवाए जाते हैं।

बोलना जीवन का इतना बड़ा भाग है कि हमारा विश्वास हमारे प्रतिदिन के वार्तालाप में लगे होना आवश्यक है। उसे इस विषय का इतना ध्यान है कि कइयों ने उसकी पत्री को ''मसीही वार्तालाप को बढ़ाना'' पर पाठ्य-पुस्तक का नाम दिया है। पत्री की सभी आयतों के लगभग 20 प्रतिशत में हमारे बोलने के किसी न किसी पहलू की बात है।

याकूब 3:1-12 के हमारे पाठ का हवाला उस मार्ग की सबसे विस्तृत चर्चा है, जिसकी बात हम नये नियम में करते हैं। इन आयतों में याकूब गले की नस अर्थात जीभ तक चला जाता है जो मुख्य समस्या है। बीसवीं शताब्दी के मसीही के लिए मानना आवश्यक है इस वचन की समस्या और इससे मेल खाता संदेश ही केवल पुराना नहीं है। हम सभी को कभी न कभी अपनी ज़बान से दो चार होना ही पड़ता है।

जीभ का महत्व (3:1, 2)

आरम्भिक शब्द ही ''हे मेरे भाइयो, तुम में से बहुत उपदेशक न बनें ...'' (3:1क) प्रचारकों तथा सिखाने वालों द्वारा वर्षों से गम्भीरता से लिए जाते हैं। यह एक चौंकाने वाली बात है, जो याकूब कहता है। पवित्र शास्त्र के अन्य वचनों से यह स्पष्ट लगेगा (इब्रानियों 5:12; इफिसियों 4:11) कि याकूब सिखाने वालों को निराश नहीं करना चाहता। वह यह कह रहा है कि ज़िम्मेदारी के साथ उपदेशक जवाबदेही भी मिलती है। इसीलिए वह हमें बताना चाहता है कि उपदेशकों को अधिक दण्ड मिलेगा। स्पष्टतया किसी भी व्यक्ति के लिए उपदेशक के काम को खतरनाक मानना आवश्यक है। मसीही उपदेशक को एक बहुमूल्य विरासत मिली है। वह यहूदी रब्बी के पदचिह्नों पर चलता है। कई अच्छे रब्बियों ने लोगों को सिखाने का शानदार काम किया। परन्तु आम तौर पर रब्बियों को इतना अधिक सम्मान दिया जाता था कि उनका घमण्ड सातवें आसमान पर होता था जिससे वे बर्बाद हो जाते थे। यह सम्मान इतना अधिक था कि जवान यहूदियों को अपने यहूदी रब्बियों के साथ अपने माता-पिता से बेहतर व्यवहार करना सिखाया जाता था। उदाहरण के लिए यदि किसी शत्रु ने नगर को घेर लिया हो और माता-पिता और रब्बी दोनों पकड़े गए हों तो पहले रब्बी को छुड़ाया जाना आवश्यक था। लोगों की ओर से ऐसा सम्मान मिलने से, यह समझना कठिन नहीं है कि रब्बी का अन्त कैसे हो सकता है जैसा कि यीशु ने

वर्णन किया (मत्ती 23:2-7)। वही खतरा आज भी उपदेशकों के सामने है, विशेषकर प्रचारकों के सामने। जवान लोग हर गलत कारण के लिए प्रचार की सेवा में सिर के बल होकर आते तो हैं जिसमें तारीफ़, रुतबा और मित्रों और परिवार की ओर से सराहना है, परन्तु तनाव, काम और पीड़ा को जो इससे मिलती है जानने पर छोड़ जाते हैं। उन कारणों से बने रहने में सफल होने वाले आम तौर पर आत्मिक रूप से रब्बी की तरह घमण्डी हो जाते हैं।

उपदेशक और प्रचारक ही अपनी जीभ से पाप करने की परीक्षा में नहीं पड़ते। जीभ को वश में रखना इतना कठिन है कि यह आवश्यक है कि हर मसीही अपनी जीभ की चौकसी करता रहे। यह कह कर, ''... जो कोई वचन में नहीं चूकता, वही तो सिद्ध मनुष्य है; और सारी देह जीभ पर लगाम लगा सकती है'' (3:2), याकूब कह रहा है कि उन बातों की सूची में जिन पर नियन्त्रण कठिन है जीभ को वश में करना सबसे कठिन बात है। यदि आप अपनी जीभ को वश में कर सकते हैं तो आप किसी भी बात को नियन्त्रण में कर सकते हैं।

जीभ पर काबू (3:3, 4)

इसमें शामिल कठिनाई के कारण हर मसीही के लिए जीभ को वश में करने का काम करते रहना आवश्यक है। घोड़े के मुंह में लगाम और जहाज़ को वश में रखने के लिए पतवार के उदाहरणों पर ध्यान दें, जिनका इस्तेमाल याकूब करता है। लगाम सवार को घोड़े पर नियन्त्रण करवाती है। पतवार चालक को जहाज़ पर नियन्त्रण करने के योग्य बनाती है। याकूब की नज़र में जीभ शरीर को नियन्त्रित करती है। आयत 5 में वह कहता है, ''वैसे ही जीभ भी एक छोटा सा अंग है और बड़ी-बड़ी डींगें मारती हैं ...।'' पतवार के लिए जहाज़ पर नियन्त्रण रखने या लगाम के लिए घोड़े पर नियन्त्रण रखने के लिए, निरन्तर ध्यान देना आवश्यक है। यही बात जीभ पर लागू होती है। हमें जीभ को निरन्तर नियन्त्रण में रखना आवश्यक है, वरना जीभ देह को जंगली बन जाने देगी।

याकूब के उदाहरण से एक और प्वायंट बन सकता है। लगाम, पतवार और जीभ छोटे तो हैं पर उन्हें विरोधी शक्तियों पर काबू पाना भी आवश्यक है। लगाम के लिए घोड़े के जंगली स्वभाव पर काबू पाना आवश्यक है और पतवार के लिए लहरों से और जहाज़ को रोकने वाली धाराओं से लड़ना आवश्यक है। उसी प्रकार से मानवीय जीभ को नियन्त्रण में करने और देह की अगुआई के लिए इसे विरोधी शक्तियों पर काबू पाना आवश्यक है। हमारे आस पास के भीतरी और पापी संसार का पुराना स्वभाव हर कदम पर हम से लड़ता है। घुड़सवार के लगाम को काबू में रखने और मलाह के पतवार को काबू में रखने की तरह हमें अपनी जीभ को यीशु के वश में दे देना आवश्यक है। हमें अपने जीवन के प्रभु को अपने होठों का प्रभु बनने देना आवश्यक है। हमें भजनकार की प्रार्थना को सुनना आवश्यक है: ''हे यहोवा, मेरे मुख पर पहरा बैठा, मेरे होंठों के द्वार पर रखवाली कर!'' (भजन संहिता 141:3)।

जीभ के ख़तरे (3:5-12)

याकूब ने जीभ को नियन्त्रण करने का इतना ज़बर्दस्त आग्रह इसलिए किया क्योंकि उसे अनियंत्रित जीभ के खतरों का पता है। हमें उन खतरों की जानकारी देते हुए वह अनियन्त्रित जीभ

की चौकस करने वाली बातें बताता है।

पहले तो यह शरीर को दूषित कर सकती है। याकूब कहता है:

> ... देखो, थोड़ी सी आग से कितने बड़े वन में आग लग जाती है। जीभ भी एक आग है; जीभ हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है, और सारी देह पर कलंक लगाती है, और भवचक्र में आग लगा देती है और नरक कुण्ड की आग से जलती रहती है (3:5, 6)।

वह कह रहा है कि जीभ से होने वाला नुकसान जंगल में लगी आग से होने वाले नुकसान जैसा है। जंगल की आग बेकाबू होकर अन्त में जहां से आरम्भ हुई थी उससे कहीं दूर कीमती जायदाद नष्ट कर सकती है। जीभ भी ऐसा ही कर सकती है। जीभ की एक छोटी सी चिंगारी भड़ककर बेकाबू हो सकती है जहां से यह आरम्भ हुई थी उससे कहीं दूर लोगों के जीवन नष्ट हो सकते हैं। कोई आश्चर्य की बात नहीं कि याकूब कहता है कि यह ''नरक कुण्ड की आग से जलती रहती है।'' जब हम इस प्रकार से एक दूसरे को नाश करते हैं तो शैतान मन ही मन खुश होता है।

दूसरा जीभ को *वश में* नहीं किया जा सकता। ''क्योंकि हर प्रकार के बन-पशु, पक्षी, और रेंगने वाले जन्तु और जलचर तो मनुष्य जाति के वश में हो सकते हैं और हो भी गए हैं। पर जीभ को मनुष्यों में से कोई वश में नहीं कर सकता; वह एक ऐसी बला है जो कभी रुकती ही नहीं; वह प्राण नाशक विष से भरी हुई है'' (3:7, 8) वह ढंग है जिससे आत्मा ने याकूब को कहने के लिए प्रेरित किया। स्पष्टतया लोग अपनी ही जीभ को काबू में रखने के योग्य नहीं हैं। उस जंगली, बेआराम बुराई को काबू में लाने के लिए उसे नियन्त्रण में लाने का काम किसी न किसी को करना ही होगा। जैसे बड़े जहाज़ को पतवार से चलाया जाता है और पतवार का नियन्त्रण मलाह के पास होता है। फिर से हमें अपने जीवन के प्रभु से अपने होंठों का प्रभु बनने को कहना आवश्यक है। केवल वही इतना सामर्थी है, जो उस धधकती आग को नियन्त्रण में करके उसे ऊर्जा के स्रोत में जोत सकता है।

तीसरा याकूब कहता है कि बेकाबू जीभ मसीही व्यक्ति के विश्वास के साथ अनुपयुक्त ढंग से काम करती है। उसके द्वारा इस्तेमाल उदाहरण बहुत ही सटीक हैं: ''क्या स्रोते के एक ही मुंह से मीठा और खारा जल दोनों निकलते हैं?'' (3:11)। इस उदाहरण के प्रश्न का उत्तर ज़ोरदार ढंग से ''नहीं'' है। इसके लिए ''हां'' होने के लिए इसे पूरी रीति से उस सब के विपरीत होना चाहिए जो हमें पता है। याकूब इस उदाहरण को यह पूछकर आगे ले जाता है, ''हे मेरे भाइयो, क्या अंजीर के पेड़ में जैतून या दाख की लता में अंजीर लग सकते हैं?'' (3:12)। वह मसीही लोगों को जो बात समझाना चाहता है, वह यह है कि मसीही व्यक्ति के लिए रविवार के दिन परमेश्वर की महिमा गाने और फिर परत कर सप्ताह भर अपने पड़ोसी को गालियां देने के लिए अपनी जीभ के इस्तेमाल से अधिक बेमेल कुछ नहीं है। मसीही व्यक्ति जो श्राप देता, शपथ खाता, या गप्पें मारता है, वास्तव में उसे समस्या है (नीतिवचन 4:23; मत्ती 15:18)। जो व्यक्ति निकम्मे मुंह, गंदे चुटकुलों, क्रूर बातों और ताजा तरीन गप्प के लिए प्रसिद्ध है वह शानदार मसीही लोगों की किसी सूची में नहीं है। क्यों? क्योंकि संसार भी बेकाबू जीभ होने के बेमेल को देख सकता है।

सारांश

भजन लिखने वाले ने कहा है, ''... मैं अपने चाल-चलन में चौकसी करूंगा, ताकि मेरी जीभ से पाप न हो; मैं लगाम लगाए अपना मुंह बन्द किए रहूंगा'' (भजन संहिता 39:1)। हम अपने विश्वास को अपने जीवनों में अन्तर कैसे लाने देते हैं? यीशु को अपने जीवनों का प्रभु बनाकर! जो हम कहते हैं उस पर उसे नियन्त्रण देने से बढ़कर बड़ी चुनौती हमारे लिए नहीं होगी!